M-2022-V

अनुक्रमांक/Roll No.

परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक यहाँ लिखें।

Candidate should write his/her Roll No. here.

कुल प्रश्नों की संख्या : 8 | **मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 8**

Total No. of Questions : 8 | **No. of Printed Pages : 8**

M-2022-V

सामान्य हिन्दी एवं व्याकरण

GENERAL HINDI AND GRAMMAR

पाँचवाँ प्रश्न–पत्र

FIFTH PAPER

समय : 03 घंटे] [पूर्णांक : 200

Time : 03 Hours] [Total Marks : 200

प्रश्न : 1. इस प्रश्न में **25** लघूत्तरीय प्रश्न हैं। **प्रत्येक** प्रश्न का उत्तर अधिकतम **20-25** शब्दों में देना है। **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं। **प्रत्येक** प्रश्न **03 (तीन)** अंकों का है। **(3×25=75)**

प्रश्न : (1.1) अव्ययीभाव समास को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न : (1.2) संधि किसे कहते हैं? स्वर संधि के भेद लिखिए।

प्रश्न : (1.3) मानक भाषा से आपका क्या अभिप्राय है?

प्रश्न : (1.4) संधि और समास में मुख्य अंतर बताइए।

प्रश्न : (1.5) पल्लवन को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न : (1.6) उत्कृष्ट संक्षेपण के गुण बताइए।

प्रश्न : (1.7) श्लेष अलंकार को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न : (1.8) उपमा अलंकार को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न : (1.9) व्यंजन संधि किसे कहते हैं?

प्रश्न : (1.10) वृद्धि संधि का लक्षण बताइए।

प्रश्न : (1.11) 'मुदित महीपति मंदिर आए।' उक्त पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?

प्रश्न : (1.12) 'अधजल गगरी छलकत जाए' लोकोक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।

प्रश्न : (1.13) पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं?

प्रश्न : (1.14) तद्भव शब्द किसे कहते हैं?

प्रश्न : (1.15) वाक्य में पूर्ण विराम का प्रयोग कब किया जाता है?

प्रश्न : (1.16) 'सामासिक' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न : (1.17) निम्नलिखित की संधि कीजिए।

प्र + उत्साह

अन्य + उक्ति

प्रश्न : (1.18) विसर्ग संधि किसे कहते हैं?

प्रश्न : (1.19) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

(i) जो पहले कभी नहीं हुआ हो

(ii) जिसका शत्रु जन्मा तक न हो

प्रश्न : (1.20) संक्षेपण किसे कहते हैं?

प्रश्न : (1.21) योजक चिह्न का प्रयोग कब किया जाता है?

प्रश्न : (1.22) तत्सम शब्द किसे कहते हैं? दो उदाहरण दीजिए।

प्रश्न : (1.23) असुर के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

प्रश्न : (1.24) उपमा अलंकार के अंगों के नाम लिखिए।

प्रश्न : (1.25) बीती विभावरी जाग री।

अम्बर–पनघट में डुबो रही तारा–घट ऊषा–नागरी।

उपर्युक्त पंक्तियों में कौन–सा अलंकार है?

प्रश्न : 2. प्रश्न अलंकारों से संबंधित है : **(1×5=5)**

प्रश्न : (2.1) **शब्दालंकार**

प्रश्न : 2.1 (1) अनुप्रास और यमक अलंकार में अन्तर बताइए।

प्रश्न : 2.1 (2) "कल कानन कुंडल मोरपखा उर पै बनमाल बिराजति है।" उक्त पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?

प्रश्न : 2.1 (3) "माया महा ठगनि हम जानी।

तिरगुन फाँस लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।।"

उपर्युक्त पंक्तियों में कौन–सा अलंकार है?

प्रश्न : 2.1 (4) 'तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं' में कौन–सा अलंकार है?

प्रश्न : 2.1 (5) 'यमक' अलंकार को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न : 2. प्रश्न अलंकारों से संबंधित है : **(1×5=5)**

प्रश्न : (2.2) **अर्थालंकार**

प्रश्न : 2.2 (1) रूपक अलंकार की परिभाषा दीजिए।

प्रश्न : 2.2 (2) "नवल सुन्दर श्याम–शरीर की,

सजल नीरद–सी कल कान्ति थी।" पंक्तियों में कौन–सा अलंकार है?

प्रश्न : 2.2 (3) जिसमें उपमा के चारों अंग मौजूद हों, उसे क्या कहते हैं?

प्रश्न : 2.3 (4) फूले कास सकल महि छाई।

जनु बरसा रितु प्रकट बुढ़ाई।। पंक्तियों में कौन–सा अलंकार है?

प्रश्न : 2.4 (5) 'मैया मैं तो चंद खिलौना लैहों' में कौन–सा अलंकार है?

प्रश्न : 3. वाक्यों का हिन्दी से अंग्रेजी एवं अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कीजिए। **(4×5=20)**

प्रश्न : (3.1) निम्नलिखित वाक्यों का **हिन्दी से अंग्रेजी** में अनुवाद कीजिए। **प्रत्येक** प्रश्न **04 (चार)** अंकों का है।

प्रश्न : 3.1 (1) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत का राज्यक्षेत्र है।

प्रश्न : 3.1 (2) मामला अभी भी समीक्षाधीन है।

प्रश्न : 3.1 (3) शांति समझौते पर दोनों पक्षों द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

प्रश्न : 3.1 (4) पुल नदी के ऊपर है।

प्रश्न : 3.1 (5) इस कमरे का दरवाजा छोटा है।

प्रश्न : 3. वाक्यों का हिन्दी से अंग्रेजी एवं अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कीजिए। **(3×5=15)**

प्रश्न : (3.2) निम्नलिखित वाक्यों का **अंग्रेजी से हिन्दी** में अनुवाद कीजिए। **प्रत्येक** प्रश्न **03 (तीन)** अंकों का है।

प्रश्न : 3.2 (1) The police immediately rushed to the site of the accident.

प्रश्न : 3.2 (2) The invading army sacked the city.

प्रश्न : 3.2 (3) The court reserved the judgement.

प्रश्न : 3.2 (4) They have been playing since morning.

प्रश्न : 3.2 (5) My mother has been cooking for an hour.

प्रश्न : 4. इस प्रश्न में हिन्दी व्याकरण से संबंधित (संधि, समास, विराम चिह्न इत्यादि) प्रश्न हैं। **सभी प्रश्न अनिवार्य** हैं। **प्रत्येक** प्रश्न **02 (दो)** अंकों का है। **(2×10=20)**

प्रश्न : (4.1) 'उच्छिष्ट' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।

प्रश्न : (4.2) 'महैश्वर्य' में स्वर संधि का कौन-सा भेद है?

प्रश्न : (4.3) 'धनुष्टंकार' शब्द में कौन-सी संधि होगी?

प्रश्न : (4.4) समस्त या सामासिक पदों को अलग-अलग करना क्या कहलाता है?

प्रश्न : (4.5) किस समास में दोनों खण्ड प्रधान होते हैं?

प्रश्न : (4.6) दो विपरीतार्थक शब्दों के बीच कौन-सा चिह्न लगाया जाता है?

प्रश्न : (4.7) वाह तुम्हारे क्या कहने — वाक्य में उपयुक्त चिह्न का प्रयोग करते हुए पुनः लिखिए।

प्रश्न : (4.8) किसी वाक्य या अवतरण को ज्यों का त्यों उद्धृत करने के लिए प्रयुक्त चिह्न क्या कहलाता है?

प्रश्न : (4.9) किन्हीं दो विराम चिह्नों के नाम संकेत सहित लिखिए।

प्रश्न : (4.10) 'यह कहानी जो किसी मजदूर के जीवन से संबंधित है बड़ी मार्मिक है', — इस वाक्य को सही विराम चिह्नों के साथ पुनः लिखिए।

प्रश्न : 5. इस प्रश्न में प्रारंभिक व्याकरण, शब्दावलियों से संबंधित निम्नलिखित **10** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रत्येक प्रश्न 02 (दो) अंकों का है।** **(2×10=20)**

S. No.	प्रश्न
1	'वसीयतनामा' का अंग्रेजी में पारिभाषिक शब्द बताइए।
2	Acting का हिन्दी में पारिभाषिक शब्द लिखिए।
3	'एक आँख से देखना' मुहावरे का अर्थ बताइए।
4	'जारस' शब्द का विलोम बताइए।
5	जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो, उसे एक शब्द में क्या कहते हैं?
6	'बच्चा' शब्द का तत्सम रूप लिखिए।
7	'चोर' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
8	'राठणी' का मानक रूप लिखें।
9	'हाथी के पाँव में सबका पाँव' कहावत का अर्थ बताइए।
10	'श्री गणेश' का विलोम शब्द बताइए।

प्रश्न : 6. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अभ्यर्थी जिस गद्यांश का उत्तर लिख रहे हैं उसके स्पष्ट शीर्षक/क्रमांक का उल्लेख करें। **(4×5=20)**

गद्यांश :

(अ) "साहित्योन्नति के साधनों में पुस्तकालयों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इनके द्वारा साहित्य के जीवन की रक्षा, पुष्टि और अभिवृद्धि होती है। पुस्तकालय सभ्यता के इतिहास का जीता-जागता गवाह है। इसी के बल पर वर्तमान भारत को अपने अतीत गौरव पर गर्व है। पुस्तकालय भारत के लिए कोई नई वस्तु नहीं है। लिपि के आविष्कार से आज तक लोग निरंतर पुस्तकों का संग्रह करते आ रहे हैं।

पहले देवालय, विद्यालय और नृपालय इन संग्रहों के प्रमुख स्थान होते थे। इनके अतिरिक्त, विद्वज्जनों के अपने निजी पुस्तकालय भी होते थे। मुद्रणकला के आविष्कार से पूर्व पुस्तकों का संग्रह करना आजकल की तरह सरल बात न थी। आजकल साधारण स्थिति के पुस्तकालय में जितनी संपत्ति लगती है, उतनी उन दिनों कभी–कभी एक–एक पुस्तक की तैयारी में लग जाया करती थी। भारत के पुस्तकालय संसार भर में अपना सानी नहीं रखते थे। प्राचीन काल से मुगल सम्राटों के समय तक यही स्थिति रही। चीन, फारस प्रभृति सुदूर स्थित देशों से झुण्ड के झुण्ड विद्यानुरागी लम्बी यात्राएँ करके भारत आया करते थे।"

प्रश्न :

(i) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

(ii) पुस्तकालयों के कारण भारत को क्या गौरव प्राप्त हुआ था?

(iii) पुराने समय में अधिक व्यय क्यों होता था?

(iv) साहित्य की उन्नति का सबसे महत्वपूर्ण साधन क्या है?

(v) पहले पुस्तकालय किन–किन स्थानों पर हुआ करते थे?

अथवा

(ब) संस्कृति और सभ्यता — ये दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग–अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, करुणा, प्रेम और परोपकार सीखता है। आज रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लम्बी–चौड़ी सड़कें और बड़े–बड़े मकान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर संस्कृति उन सबसे कहीं बारीक चीज है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है, मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाट–बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि, सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े लत्ते होते हैं, जबकि संस्कृति इतने मोटे तौर पर दिखलाई नहीं देती। वह बहुत ही सूक्ष्म और महान चीज है और वह हमारी हर पसंद, हर आदत में छिपी रहती है। संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान–प्रदान से बढ़ती है। आदमी के भीतर काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर ये छः विकार प्रकृति के दिए हुए हैं। मगर ये विकार अगर बेरोक छोड़ दिए जाएँ तो आदमी इतना गिर जाएगा कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाएगा। इसलिए आदमी इन विकारों पर रोक लगाता है।

प्रश्न :

(i) 'सभ्यता' से क्या अभिप्राय है?

(ii) 'संस्कृति' से क्या अभिप्राय है?

(iii) संस्कृति, सभ्यता से किस रूप में भिन्न होती है?

(iv) संस्कृति का मूल स्वभाव क्या है?

(v) मानव की मानवीयता किस बात में निहित है?

प्रश्न : 7. रेखांकित अथवा दी गई पंक्तियों का पल्लवन अथवा भाव पल्लवित कीजिए। अभ्यर्थी जिस प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं उसका स्पष्ट उल्लेख उत्तर के प्रारंभ में अनिवार्यतः करें। प्रश्न **10 (दस)** अंकों का है। **(10×1=10)**

प्रश्न : 7. (अ) "मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।"

अथवा

(ब) "परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।"

प्रश्न : 8. किसी **एक** गद्यांश का **एक तिहाई** शब्दों में संक्षेपण कीजिए। अभ्यर्थी जिस गद्यांश का संक्षेपण कर रहे हैं उसका स्पष्ट उल्लेख उत्तर के प्रारंभ में अनिवार्यतः करें। प्रश्न **10 (दस)** अंकों का है। **(10×1=10)**

प्रश्न : 8. (अ) ऋतुराज वसंत के आगमन से ही शीत का भयंकर प्रकोप भाग जाता है। पतझड़ में पश्चिम–पवन ने जीर्ण–शीर्ण पत्रों को गिराकर लता कुंजों, पेड़–पौधों को स्वच्छ और निर्मल बना दिया। वृक्षों और लताओं के अंग में नूतन पत्तियों के प्रस्फुटन से यौवन की मादकता छा गई। कनेर, मदार, पाटल इत्यादि पुष्पों की सुगंधि दिग्दिगंत में अपनी मादकता का संचार करने लगी। न शीत की कठोरता, न ग्रीष्म का ताप, समशीतोष्ण वातावरण में प्रत्येक प्राणी की नस–नस में उत्फुल्लता और उमंग की लहरें उठ रही हैं। गेहूँ के सुनहले बालों से पवन स्पर्श के कारण रुनझुन का संगीत फूट रहा है। पत्तों के अधरों पर सोया हुआ संगीत मुखर हो गया है। पलाश वन अपनी अरुणिमा में फूला नहीं समाता है। ऋतुराज वसंत के सुशासन और सुव्यवस्था की छटा हर ओर दिखाई पड़ती है। कलियों के यौवन की अँगड़ाई भ्रमरों को आमंत्रण दे रही है। वसंत के आगमन के साथ ही जैसे जीर्णता और पुरातन का प्रभाव तिरोहित

हो गया है। प्रकृति के कण-कण में नएह्न जीवन का संचार हो गया है। आम्रमंजरियों की भीनी गंध और कोयल का पंचम आलाप, भ्रमरों का गुंजन और कलियों का चटक वनों और उद्यानों के अंगों में शोभा का संचार, सब ऐसा लगता है जैसे जीवन में सुख ही सत्य है, आनन्द के एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके भी नहीं चुकाया जा सकता है। प्रकृति ने वसंत के आगमन पर अपने रूप को इतना सँवारा है, अंग-अंग को सजाया और रचा है कि उसकी शोभा का वर्णन असंभव है। उसकी उपमा नहीं दी जा सकती।

अथवा

(ब) मनुष्य, उत्सव प्रिय होते हैं। उत्सवों का एक मात्र उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। पर, उस सुख और उत्सव के इस आनन्द में बड़ा अंतर है। आवश्यकता अभाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किसी बात की कमी है। मनुष्य जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिन्ता उसे सताती ही रहती है। इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यंत क्षणिक होता है, क्योंकि तुरंत ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यही नहीं इस दिन हम अपने काम-काज छोड़कर विशुद्ध आनन्द की प्राप्ति करते हैं। यह आनन्द जीवन का आनन्द है, काम का नहीं। उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को भूलकर केवल मनुष्यत्व का ख्याल करते हैं। उस दिन हम अपनी स्वार्थ-चिन्ता छोड़ देते हैं, कर्त्तव्यभार की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को भूल जाते हैं। उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, स्वच्छन्दता आ जाती है। उस दिन हमारी दिनचर्या बिल्कुल नष्ट हो जाती है।

★★★